भारतीय अर्थव्यवस्था का औपचारिकीकरण की ओर अवस्थांतरण

भारतीय अर्थव्यवस्था वर्तमान समय में औपचारिकीकरण की ओर बढ़ती प्रवृत्ति के साथ एक परिवर्तनकारी दौर से गुजर रही है, एक ऐसी प्रक्रिया जो लाखों लोगों के लिए नौकरी संरचना, रोजगार सुरक्षा और सामाजिक लाभों को फिर से परिभाषित कर रही है। यह परिवर्तन भारत के कार्यबल के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे सुनिश्चित होता है कि आबादी का एक बड़ा हिस्सा सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों द्वारा कवर किया जा रहा है। इससे उन्हें अधिक आर्थिक स्थिरता और सुरक्षित भविष्य प्राप्त हो रही है।

इस यात्रा में कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) एक महत्वपूर्ण संस्थान के रूप में स्थापित है, जो पूरे देश में वेतनभोगी श्रमिकों के लिए दीर्घकालिक बचत योजना और सामाजिक सुरक्षा लाभों का प्रबंधन करता है। ईपीएफओ औपचारिकीकरण प्रक्रिया को ट्रैक करके और उसका समर्थन करके न केवल महत्वपूर्ण वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है बल्कि कार्यबल को ज्यादा संगठित और संरक्षित संरचना की ओर अवस्थांतरित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अर्थव्यवस्था का औपचारिकीकरण क्या है?

औपचारिकीकरण तब होता है जब नौकरियां **अनौपचारिक क्षेत्र** (छोटे, अपंजीकृत व्यवसाय और दैनिक वेतनभोगी श्रमिकों) से **औपचारिक क्षेत्र** (जहां श्रंमिकों की पहुंच अनुबंध, नौकरी की सुरक्षा और लाभों तक होती है) में स्थानांतरित होती हैं। औपचारिक अर्थव्यवस्था में श्रमिकों को निश्चित वेतन, स्वास्थ्य लाभ, भुगतान अवकाश और सेवानिवृत्ति बचत जैसी कानूनी सुरक्षा का लाभ मिलता है। यह परिवर्तन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सुनिश्चित करता है कि ज्यादा लोग सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों द्वारा कवर हों, जिससे उनका जीवन ज्यादा स्थिर और सुरक्षित बन सके।

सरल शब्दों में कहें तो औपचारिकीकरण का मतलब है कि ज्यादा श्रमिकों को सरकारी नियमों और लाभों के तहत लाना है। इससे वे आर्थिक उतार-चढ़ाव से प्रभावित न हों।

ईपीएफओ क्या है और यह श्रमिकों को कैसे लाभ पहुंचाता है?

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) भारत सरकार का एक निकाय है जो वेतनभोगी श्रमिकों के लिए बचत योजना का प्रबंधन करता है। **ईपीएफ योजना** एक दीर्घकालिक बचत योजना जैसा है, जहां कर्मचारी और नियोक्ता दोनों प्रत्येक माह वेतन का एक छोटे हिस्से का

योगदान करते हैं। यह राशि जमा होती रहती है और इस राशि को सेवानिवृत्त होने पर या आपात स्थिति में निकाला जा सकता है।

ईपीएफओ बहुत ज्यादा लाभप्रद है, क्योंकि यह कर्मचारियों को उनके करियर और सेवानिवृत्ति में महत्वपूर्ण सहायता एवं सुरक्षा प्रदान करता है। पहला, ईपीएफओ एक सेवानिवृत्ति निधि स्थापित कर वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करता है जिस पर श्रमिक अपनी उम्र बढ़ने के साथ भरोसा कर सकते हैं, जो उन्हें बाद के वर्षों में एक महत्वपूर्ण सहायता प्रणाली प्रदान करता है। इसके अलावा कर्मचारी जमा संबद्ध बीमा योजना (ईडीएलआई) जैसी योजनाओं के अंतर्गत जीवन बीमा लाभों के माध्यम से बीमा कवरेज प्रदान किया जाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि सदस्यों को अप्रत्याशित घटनाओं के मामले में सुरक्षा जाल प्राप्त हो सके। सेवानिवृत्ति पर कर्मचारी मासिक पेंशन के पात्र होते हैं, जो उनके स्वर्णिम वर्षों में एक स्थिर आय प्रदान करता है, जिससे उनकी वित्तीय स्थिरता मजबूत होती है। इसके अलावा ईपीएफओ चिकित्सा एवं आपातकालीन निकासी के लिए इसमें एक प्रकार का लचीलापन होता है, जिसमें सदस्यों को चिकित्सा की आपात स्थितिए शिक्षा के लिए खर्च या घर खरीदने जैसी आवश्यकताओं के लिए धन निकालने की अनुमति होती है, जिससे यह एक अत्यधिक बहुमुखी वित्तीय साधन बन जाता है जो जीवन के विभिन्न चरणों और मांगों अनुरूप होता है।

संक्षेप में ईपीएफओ एक सुरक्षा जाल की तरह कार्य करता है और यह सुनिश्चित करता है कि श्रमिक सुरक्षित रहें और उन्हें वित्तीय स्थिरता प्राप्त हो।

ईपीएफओ पंजीकरण किस प्रकार से बढ़ती औपचारिकीकरण को दर्शाता है

जब कोई कर्मचारी ईपीएफओ में पंजीकृत होता है तो इसका मतलब यह है कि उनके पास एक औपचारिक नौकरी है जहां उनका नियोक्ता उनकी सामाजिक सुरक्षा में योगदान करता है। **अधिक ईपीएफओ पंजीकरण से संकेत मिलता है कि अधिक नौकरियां औपचारिक क्षेत्र में मिल रही हैं**, जिसका मतलब है कि अधिक लोगों को उपरोक्त लाभ और सुरक्षा तक पहुंच प्राप्त हो रही है। यह एक संकेत है कि भारतीय अर्थव्यवस्था अधिक संगठित हो रही है, कंपनियां अपने कर्मचारियों को बेहतर समर्थन देने वाले नियमों का पालन कर रही हैं।

डेटा हमें क्या बताता है: प्रगति की एक कहानी

ईपीएफओ द्वारा प्रदान किए गए आंकड़ों के अनुसार:

सितंबर 2017 से जुलाई 2024 तक, 6.91 करोड़ से अधिक सदस्य ईपीएफओ में शामिल हुए हैं। इसका मतलब यह है कि **लगभग 7 करोड़ लोगों** ने अधिक सुरक्षित, औपचारिक नौकरियों में अवस्थांतरण किया है।

यह प्रवृत्ति अपने कार्यबल को औपचारिक बनाने की दिशा में भारत की कोशिश को दर्शाती है, जिससे कर्मचारियों को बेहतर नौकरी सुरक्षा प्राप्त होती है।

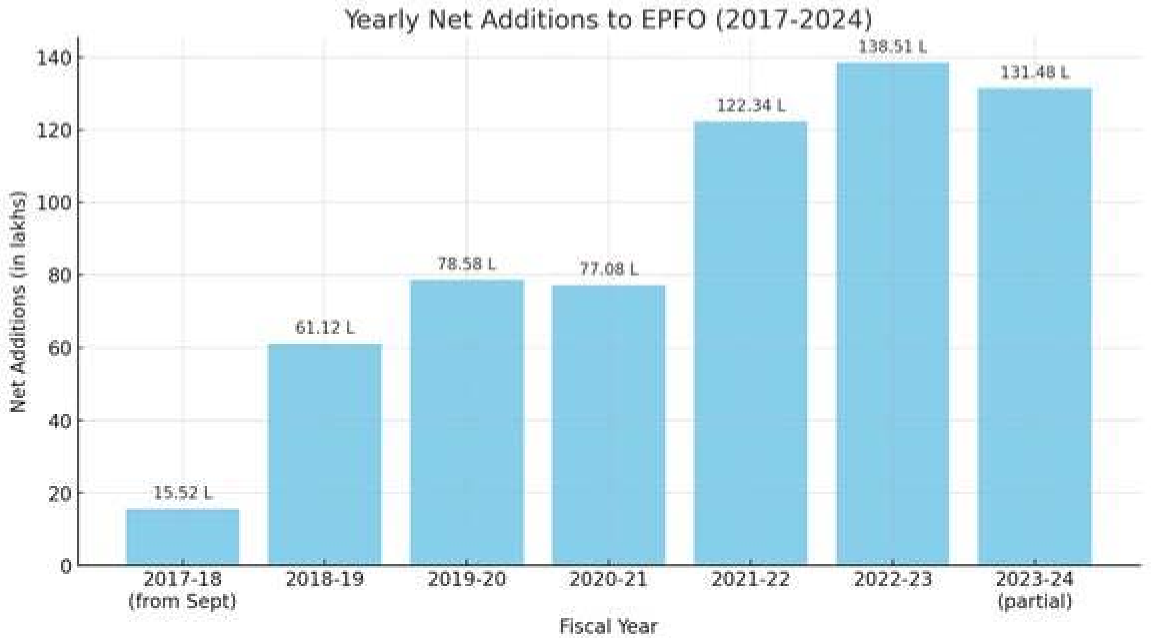

हाल के रुझानों का अवलोकन करें:

- वित्त वर्ष **2022-23 में** ईपीएफओ से **1.38 करोड़ नए सदस्य** जुड़े हैं।
- **अप्रैल से जुलाई 2024** तक मासिक पंजीकरण लगातार बढ़ रहा है, **केवल जुलाई में लगभग 20 लाख नए सदस्य जुड़े हैं।**
- **जून 2024 ईपीएफओ डेटा के अनुसार:**
- **नौकरी बदलना और फंड ट्रांसफर:** कई सदस्यों ने नौकरी बदल ली और ईपीएफओ से जुड़े प्रतिष्ठानों में फिर से शामिल हो गए और अंतिम निपटान के लिए आवेदन करने के बजाय अपने संचित धन को स्थानांतरित करने का विकल्प चुना। यह कदम उनकी दीर्घकालिक वित्तीय लाभ को सुरक्षित करने में मदद करता है और निरंतर सामाजिक सुरक्षा सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

- **कार्यबल में शामिल होने वाले युवा:** यह प्रवृत्ति पहले के आंकड़ों के साथ संरेखित होती है, जिससे पता चलता है कि संगठित कार्यबल में शामिल होने वाले लोगों का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा युवाओं का हैं, मुख्य रूप से वे पहली बार नौकरी पाने वाले लोग हैं।
- **महिला सदस्यों की संख्या में वृद्धि:** पंजीकरण में महिला सदस्यों की संख्या में वृद्धि अधिक समावेशी और विविध कार्यबल की ओर सकारात्मक बदलाव को दर्शाती है।
- यह रोजगार सृजन में सकारात्मक आवेग को दर्शाता है, जो एक मजबूत श्रम बाजार और बढ़ती औपचारिकता का संकेत देता है।

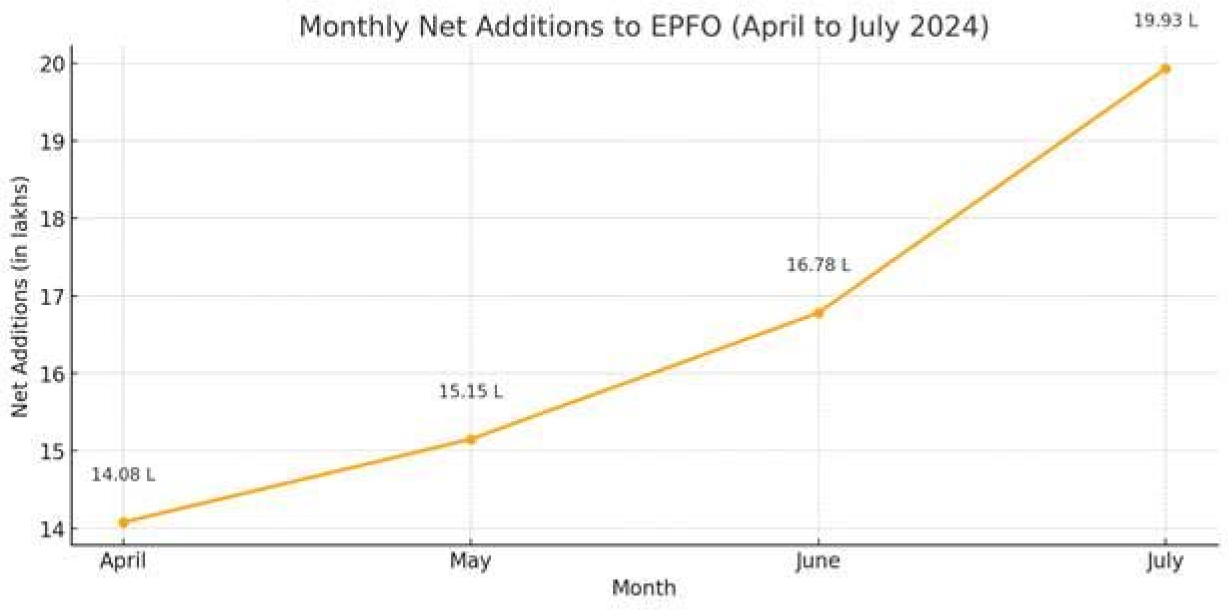

इसे स्पष्ट रूप से समझने के लिए भारत के एक छोटे शहर के 35 वर्षीय फैक्ट्री कर्मचारी रमेश से जुड़े परिदृश्य पर विचार करें। अपने करियर के अधिकांश समय में उसे बिना किसी नौकरी सुरक्षा के प्रतिदिन नकद भुगतान किया गया। अगर वह बीमार पड़ जाता तो उसकी एक दिन की मज़दूरी कम हो जाती। अगर फैक्ट्री बंद हो जाती तो वह बिना आय के बेरोजगार हो जाता।

लेकिन रमेश जिस फैक्ट्री में काम करता है उसके मालिक ने हाल ही में अपने कारोबार को ईपीएफओ के साथ पंजीकृत कराने का निर्णय लिया। इससे रमेश के लिए सब कुछ बदल चुका है:

अब, रमेश को प्रति माह एक **निश्चित वेतन** मिलता है, जो सीधे उनके बैंक खाते में जमा होता है।

उसका नियोक्ता उसके **ईपीएफ खाते** में योगदान देता है, जिससे उसे सेवानिवृत्ति के बाद सुरक्षा जाल प्राप्त होता है।

रमेश को जीवन बीमा का भी लाभ मिल रहा है और अगर उनके परिवार को आपात स्थिति का सामना करना पड़ता है तो **चिकित्सा निकासी** तक उनको पहुंच प्राप्त है।

यह जानकर कि उसके पास सेवानिवृत्ति फंड और नौकरी सुरक्षा है, रमेश के मन की शांति मिली है। वह अपने बच्चों की शिक्षा की योजना बना सकता है और एक दिन एक छोटा सा घर खरीदने के बारे में भी सोच सकता है।

इस बदलाव ने रमेश के जीवन को बदल दिया है। और वह अकेला नहीं हैं - पूरे देश के लाखों श्रमिक समान लाभ प्राप्त कर रहे हैं क्योंकि अधिक नौकरियां औपचारिक बन गई हैं।

अधिक सुरक्षित भविष्य की ओर बढ़ना

भारतीय अर्थव्यवस्था को औपचारिक रूप प्रदान करने की दिशा में यात्रा सकारात्मक है। **ईपीएफओ डेटा** स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि प्रति वर्ष अधिक लोगों को सुरक्षित, औपचारिक नौकरियों तक पहुंच प्राप्त हो रही है। यह सिर्फ एक संख्या नहीं है, बल्कि यह रमेश जैसे श्रमिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए है, जिनके पास अब अपने भविष्य की योजना बनाने के लिए वित्तीय सुरक्षा उपलब्ध है।

औपचारिक नौकरी में पंजीकरण बढ़ाकर, भारत एक मजबूत एवं अधिक लचीले कार्यबल तैयार कर रहा है। इसका मतलब है कि कठिन समय के दौरान भी, कोविड-19 महामारी की तरह, परिवारों की सुरक्षा के लिए एक सुरक्षा जाल मौजूद है।

ईपीएफओ पंजीकरण में बढ़ोत्तरी एक मजबूत संकेतक है जो दर्शाता है कि भारत का कार्यबल अधिक संगठित और सुरक्षित हो रहा है। यह एक औपचारिक अर्थव्यवस्था की ओर देश की प्रगति को दर्शाता है जहां श्रमिकों की रक्षा और सशक्तिकरण होता है। जैसे-जैसे भारत इस दिशा में आगे बढ़ेगा लाखों श्रमिक बेहतर नौकरी सुरक्षा, सामाजिक लाभ और उज्ज्वल भविष्य का आनंद प्राप्त करेंगे।

स्रोत-

https://www.epfindia.gov.in/site_docs/PDFs/EPFO_PRESS_RELEASES/PressRelease_20062024.pdf

भारतीय रिजर्व बैंक का केएलईएमएस डेटाबेस

कृप्या पीडीएफ फाइल प्राप्त करें

एमजी/केसी/आरकेजे

(पृष्ठभूमि आईडी: 153420)